3 मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का कोसला धाम दौरा

5 जननायक बनने की राह पर विजय थलापति

6 ईरान-अमेरिका युद्ध में तेल की बर्बादी

RNI-MPBIL/2011/39805 DAVP/134083/25

निष्पक्ष और निर्भीक साप्ताहिक

जगत प्रवाह

वर्ष : 17 अंक : 02 प्रति सोमवार, 18 मई 2026 मूल्य : दो रुपये पृष्ठ : 8

माणिक मेहता : हत्या या सामान्य मौत

होनी चाहिए सीबीआई जांच

खाकी के खौफ के आगे बेबस-लाचार इंसाफ, रिटायरमेंट के बाद डीजी के पद से नवाजा गया मुकेश गुप्ता को

कवर स्टोरी

-विजया पाठक
एडिटर

माणिक मेहता की मौत की खबर सुनकर मैं काफी स्तब्ध हूं। मन वेदना से भर आया है। पिछले डेढ़ दशक से माणिक मेहता मेरे काफी करीब रहे हैं। संदिग्ध परिस्थितियों में हुई माणिक की मौत से मैं बहुत अचंभित हूं। माणिक ने अपनी पूरी जिंदगी संघर्ष और मुसीबतों के बीच बिताई। लेकिन एक जिंदादिल इंसान की तरह अपने मकसद से पीछे नहीं हटे और हार न मानते हुए प्रयासरत रहे। लेकिन आखरी समय तक भी माणिक को इंसाफ नहीं मिल पाया। क्योंकि खाकी के ख़ौफ़ और रसूख़ के आगे इंसाफ बेबस तथा लाचार नजर आया। अब माणिक की संदिग्ध मौत के साथ ही सैंकड़ों इंसाफ दफन हो गये। जिसकी लड़ाई माणिक लड़ रहा था। मेहता परिवार में इंसाफ की मुहिम में तीन मौतें हो गई हैं। अधूरा इंसाफ और सिस्टम पर उठते सवालों के बीच मेहता परिवार की आखिरी उम्मीद भी पंचतत्व में विलीन हो गई। अब माणिक मेहता के परिजनों ने साफ़ कर दिया है कि वे अब इन्साफ से तौबा करते हैं। भविष्य में छत्तीसगढ़ जैसे शांत प्रदेश में कभी भी ऐसी दुःखद वारदात किसी घर परिवार में ना हो? चर्चित डॉ. मिक्की मेहता हत्या-आत्महत्या कांड की गुत्थी अभी सुलझी भी नहीं थी कि पीड़ित परिवार के एक मात्र सगे भाई माणिक मेहता की संदिग्ध हालातों में मौत हो गई। 55 वर्षीय माणिक मेहता का शव उनके घर पर संदिग्ध हालत में पाया गया। उनकी लाश किचन के वॉश बेसिन पर गिरी हुई अवस्था में पाई गई। छत्तीसगढ़ में मिक्की मेहता की 2001 में हुई संदिग्ध मौत के मामले में माणिक ने मिक्की मेहता की संदिग्ध मौत को संदिग्ध नहीं होने की बात करते हुए कहा था कि उसकी हत्या हुई हैं। माणिक की बहन मिक्की मेहता से मुकेश गुप्ता ने पहले से शादीशुदा होते हुए भी 1999 विवाह किया था।

कहीं माणिक के पास मौजूद सैंकड़ों फाईल तो नहीं मौत का कारण!

यदि माणिक जिंदा होते तो शायद कई हाई प्रोफाईल लोग कानूनी शिकंजे में होते

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार माणिक मेहता की जिस मकान में रहस्यमयी तरीके से मौत हुई है, उस मकान के एक कमरे में सैंकड़ों फाईलों का जख़ीरा था। जो कई राजनीतिक लोगों और बड़े-बड़े अधिकारियों से संबंधित थी। जिसका जिक्र माणिक सोशल मीडिया या अन्य तरीकों से करते रहते थे। पूर्व ADG मुकेश गुप्ता की फाईल भी माणिक के पास थी। कहा जा सकता है कि कई लोगों को यह आशंका सता रही होगी कि उन फाईलों में क्या है। (शेष पेज 2 पर)

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में प्रशासनिक सेवाओं में पारदर्शिता, जवाबदेही और तकनीकी नवाचार का नया दौर

'सेवा सेतु' से डिजिटल सुशासन की नई पहचान गढ़ रहा छत्तीसगढ़

-विजया पाठक

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ तेजी से डिजिटल सुशासन की दिशा में आगे बढ़ रहा है। राज्य सरकार ने प्रशासनिक व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और जन केंद्रित बनाने के उद्देश्य से जो पहलें शुरू की हैं, उनमें "सेवा सेतु" एक ऐतिहासिक और परिवर्तनकारी कदम के रूप में उभरकर सामने आया है। यह केवल एक डिजिटल पोर्टल नहीं, बल्कि आम नागरिकों और शासन के बीच विश्वास, सरलता और सुगमता का नया सेतु बन चुका है। आज जब देश डिजिटल क्रांति के दौर से गुजर रहा है, तब सुशासन का अर्थ केवल योजनाओं की घोषणा भर नहीं रह गया है। अब वास्तविक सुशासन वही माना जाता है, जहां नागरिकों को सरकारी सेवाएं समय पर, पारदर्शी तरीके से और बिना अनावश्यक परेशानियों के उपलब्ध हों। छत्तीसगढ़ सरकार ने इसी सोच को व्यवहारिक रूप देने का कार्य किया है। "सेवा सेतु" के माध्यम से सरकार ने यह साबित किया है कि तकनीक का सही उपयोग केवल व्यवस्था को आधुनिक नहीं बनाता, बल्कि आम जनता के जीवन को भी सरल और सम्मानजनक बनाता है। (शेष पेज 2 पर)

बंगाल विजय के असली शिल्पकार कैलाश विजयवर्गीय

संघर्ष, रणनीति और संगठन शक्ति से भाजपा को दिलाई ऐतिहासिक सफलता

-विजया पाठक

भारतीय राजनीति में पश्चिम बंगाल का चुनाव हमेशा से केवल सत्ता परिवर्तन का चुनाव नहीं माना गया, बल्कि यह वैचारिक संघर्ष, राजनीतिक धैर्य और संगठनात्मक क्षमता की सबसे बड़ी परीक्षा के रूप में देखा जाता रहा है। (शेष पेज 3 पर)

मध्यप्रदेश कांग्रेस के लिए फिर संजीवनी बन सकते हैं कमलनाथ

मप्र कांग्रेस को राज्यसभा की सीट बचानी है तो कमलनाथ पर करना होगा भरोसा

-विजया पाठक

मई-जून 2026 में प्रस्तावित तीन सीटों के चुनाव को लेकर राजनीतिक दल अपने-अपने समीकरण साधने में जुट गए हैं। इसी कड़ी में कांग्रेस का ध्यान एक ऐसे चेहरे पर टिक रहा है, जो अनुभव, संतुलन और संगठन तीनों का संगम माना जाता है। वर्तमान में कमलनाथ ही ऐसे चेहरे के रूप में सामने आ रहे हैं। यह भी सच है कि कांग्रेस के लिए राज्यसभा की एक सीट बचाना मुश्किल समझ आ रहा है। ऐसी परिस्थितियां बन रही हैं कि बीजेपी, कांग्रेस से यह भी सीट छीन सकती है। यदि कांग्रेस को यह सीट बचानी है तो कमलनाथ को आगे आना होगा। हाईकमान को आज मप्र में ऐसे नेतृत्व की जरूरत है जो जमीन से जुड़ा हो। राज्यसभा में भी ऐसे ही नेता को उम्मीदवार बनाना होगा। हाईकमान को मध्यप्रदेश के मौजूदा हालातों पर विचार करना होगा। (शेष पेज 5 पर)

माणिक की संदिग्ध मौत से दफन हो गये सैंकड़ों इंसाफ

(पेज 1 का शेष)

शायद माणिक की इस तरह की प्रतिक्रियाएं नागवार गुजर रही हों। यदि माणिक जिंदा होते तो शायद कई हाई प्रोफाईल लोग कानूनी शिकंजे में होते।

पुलिस की चुप्पी से गहराता रहस्य

इस पूरे संवेदनशील मामले में रायपुर पुलिस का रवैया गंभीर सवालों के घेरे में है। लोग लगातार यह पूछ रहे हैं कि इतनी बड़ी घटना के बाद भी रायपुर पुलिस की ओर से अब तक कोई आधिकारिक पत्रकार वार्ता क्यों नहीं की गई है? पुलिस इस हाई-प्रोफाइल मामले में रहस्यमयी चुप्पी क्यों साधे हुए है। खाकी की यह खामोशी ही इस शक को पुख्ता कर रही है कि दाल में कुछ काला जरूर है। स्थानीय पुलिस की लीपापोती और किसी भी तरह के दबाव से बचने के लिए माणिक मेहता की मौत की त्वरित और निष्पक्ष न्यायिक जांच कराई जाए। लोगों का स्पष्ट कहना है कि जब तक किसी स्वतंत्र एजेंसी या न्यायिक समिति से इस पूरे प्रकरण की जांच नहीं होती, तब तक असली गुनहगार सामने नहीं आएंगे। मेरी मांग है कि माणिक मेहता की मौत की सीबीआई न्यायिक जांच कराई जाए।

(1) बायें से- पत्रकार नारायण शर्मा, माणिक मेहता के बहनोई राजीव वेदी, माणिक मेहता की बहिन अंजु वेदी और पत्रकार उचित शर्मा। (2) माणिक मेहता के कमरे में उपलब्ध थीं रसूखदार नेताओं-अफसरों से संबंधित फाइलें। (3) मुकेश गुप्ता और मिक्की मेहता।

मिक्की मेहता पार्ट- 2 बनने का डर

लोगों के जहन में मिक्की मेहता की मौत का अनसुलझा अध्याय आज भी ताजा है। उस मामले में भी न्याय सिर्फ फाइलों में भटकता रह गया। माणिक मेहता प्रकरण में पुलिस की इसी हीलाहवाली ने लोगों के मन में यह ख़ौफ़ पैदा कर दिया है कि कहीं यह केस भी मिक्की मेहता पार्ट-2 की तर्ज पर हमेशा के लिए एक डार्क मिस्ट्री न बन जाए।

माणिक की संघर्ष भरी कहानी

माणिक मेहता पिछले लगभग 25 सालों से अपनी स्वर्गीय बहन डॉ. मिक्की मेहता को इंसाफ दिलाने के लिए पुलिस मुख्यालय की कार्यप्रणाली के साथ-साथ DG मुकेश गुप्ता के साथ भी कानूनी लड़ाई लड़ रहे थे। मिक्की मेहता को इंसाफ दिलाने के लिए माणिक मेहता ने दिन-रात एक कर दिया था। रायपुर-बिलासपुर से लेकर दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट तक वे अपनी बहन की रहस्यमयी मौत की उच्च स्तरीय जाँच की मांग के सिलसिले में कानूनी लड़ाई लड़ रहे थे। उन्होंने रायपुर के तत्कालीन एसपी पर कई गंभीर आरोप लगाए थे। हालांकि, प्रकरण में कई स्तर की जाँच विवादों के घेरे में है, इसके चलते डॉ. मिक्की मेहता को उनकी मौत के लम्बे अरसे बाद भी "ना तो इंसाफ" मिल पाया और "ना ही जाँच प्रकरण" अंजाम तक पहुंच पाया था। इस बीच माणिक मेहता की मौत ने राज्य में पुलिस की कार्यप्रणाली को लेकर नई बहस छेड़ दी है। उनकी अचानक मौत से एक बार फिर मुकेश गुप्ता का नाम सुर्खियों में है। इस मामले में डीजी और माणिक मेहता के बीच खुली कानूनी जंग भी जारी रही। इस बीच वर्ष 2018 में कांग्रेस के सत्ता में आते ही विवादित आईपीएस मुकेश गुप्ता को ADG पद से निलंबित कर दिया गया था। इस दौरान मिक्की मेहता हत्या आत्महत्या मामले की नए सिरे से जाँच भी शुरू हुई थी। मुझे उम्मीद है कि आज भले ही जीते जी माणिक को इंसाफ नहीं मिल पाया हो लेकिन ईश्वर एक न एक दिन माणिक के परिवार को न्याय जरूर दिलवायेंगे।

'सेवा सेतु' से डिजिटल सुशासन की नई पहचान गढ़ रहा छत्तीसगढ़

(पेज 1 का शेष)

कार्यालयों के चक्कर से मिली राहत

कुछ वर्ष पहले तक आय, जाति, निवास प्रमाण-पत्र या भू-नक्शा जैसी सामान्य सेवाओं के लिए लोगों को कई सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ते थे। आवेदन प्रक्रिया जटिल थी, समय अधिक लगता था और कई बार बिचौलियों की भूमिका भी आम नागरिकों के लिए परेशानी का कारण बनती थी। ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों के लोगों के लिए यह स्थिति और अधिक कठिन होती थी। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सरकार ने इस समस्या को गंभीरता से समझा और प्रशासनिक सेवाओं को डिजिटल माध्यम से लोगों तक पहुंचाने की दिशा में ठोस पहल की। "सेवा सेतु" इसी सोच का परिणाम है। अब नागरिक घर बैठे या नजदीकी लोक सेवा केंद्र के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर रहे हैं और निर्धारित समय सीमा में सेवाओं का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इससे न केवल लोगों का समय और धन बचा है, बल्कि सरकारी व्यवस्था के प्रति विश्वास भी मजबूत हुआ है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर 441 सेवाएं

छत्तीसगढ़ का पुराना ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल सीमित दायरे में कार्य कर रहा था, जहां केवल 86 सेवाएं उपलब्ध थीं। लेकिन "सेवा सेतु" ने इस व्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया। आज इस उन्नत डिजिटल प्लेटफॉर्म पर 441 से अधिक सेवाएं उपलब्ध हैं। यह उपलब्धि केवल तकनीकी विस्तार नहीं, बल्कि प्रशासनिक सोच में आए बड़े बदलाव का संकेत है। राज्य सरकार ने 30 से अधिक विभागों को इस पोर्टल से जोड़ा है, जिससे नागरिकों को अलग-अलग विभागों के लिए अलग पोर्टल या कार्यालयों में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। 54 नई सेवाओं के साथ 329 री-डायरेक्ट सेवाओं का एकीकरण यह दर्शाता है कि सरकार प्रशासनिक प्रक्रियाओं को अधिक सरल और नागरिक अनुकूल बनाने के लिए गंभीरता से कार्य कर रही है।

समयबद्ध सेवाओं की नई संस्कृति

छत्तीसगढ़ लोक सेवा गारंटी अधिनियम का उद्देश्य नागरिकों को निर्धारित समय सीमा में सेवाएं उपलब्ध कराना है। "सेवा सेतु" ने इस कानून को वास्तविक रूप से प्रभावी बनाने का कार्य किया है। पिछले 28 महीनों के आंकड़े इस पहल की सफलता को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। 75 लाख 70 हजार से अधिक प्राप्त आवेदनों में से 68 लाख 41 हजार से अधिक मामलों का निराकरण किया जा चुका है। 95 प्रतिशत से अधिक मामलों का तय समय सीमा में समाधान होना प्रशासनिक दक्षता और जवाबदेही का मजबूत उदाहरण है। यह उपलब्धि इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि सरकारी व्यवस्था में अक्सर देरी और जटिल प्रक्रियाओं की शिकायतें सामने आती रही हैं। लेकिन "सेवा सेतु" ने समयबद्ध सेवाओं की नई कार्यसंस्कृति विकसित की है, जिससे आम जनता को राहत मिली है।

प्रमाण-पत्रों की डिजिटल सुलभता

आंकड़ों के अनुसार सबसे अधिक मांग आय, मूल निवास और जाति प्रमाण-पत्र जैसी सेवाओं की रही है। आय प्रमाण-पत्र के लिए ही 32 लाख से अधिक आवेदन प्राप्त होना यह दर्शाता है कि लोग डिजिटल सेवाओं पर तेजी से भरोसा कर रहे हैं। भू-नकल, विवाह पंजीयन और अन्य आवश्यक दस्तावेजों की ऑनलाइन उपलब्धता ने नागरिकों की परेशानियां काफी हद तक कम कर दी हैं। अब लोगों को केवल एक प्रमाण-पत्र के लिए कई दिनों तक कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ते। इससे शासन व्यवस्था में पारदर्शिता बढ़ी है और भ्रष्टाचार की संभावनाएं भी कम हुई हैं।

व्हाट्सएप से जुड़कर और आसान हुई पहुंच

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सरकार ने केवल पोर्टल तक सीमित रहने के बजाय तकनीक को और अधिक जनसुलभ बनाने की दिशा में भी काम किया है। "सेवा सेतु" को व्हाट्सएप से जोड़ना इसी सोच का उदाहरण है। आज मोबाइल फोन लगभग हर व्यक्ति की पहुंच में है और व्हाट्सएप सबसे लोकप्रिय माध्यमों में शामिल है। ऐसे में इस सुविधा ने डिजिटल सेवाओं को गांव-गांव तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अब तक 3.3 करोड़ से अधिक डिजिटल ट्रांजेक्शन होना इस बात का प्रमाण है कि राज्य की जनता इस डिजिटल व्यवस्था को तेजी से अपना रही है। यह केवल तकनीकी आंकड़ा नहीं, बल्कि डिजिटल इंडिया के विजन को जमीनी स्तर पर सफल बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

पारदर्शिता और जवाबदेही का मजबूत मॉडल

"सेवा सेतु" की सबसे बड़ी विशेषता इसकी पारदर्शी कार्यप्रणाली है। इलेक्ट्रॉनिक वर्कफ्लो सिस्टम के माध्यम से हर आवेदन की रीयल-टाइम निगरानी संभव हो पाई है। इससे आवेदन कहां लंबित है, किस स्तर पर प्रक्रिया चल रही है और कितने समय में समाधान होगा। इन सभी बातों की जानकारी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। इस व्यवस्था ने अनावश्यक देरी और भ्रष्टाचार की संभावनाओं को काफी हद तक समाप्त किया है। नागरिकों को अब यह भरोसा होने लगा है कि उनकी समस्याओं का समाधान तय प्रक्रिया और समय सीमा के भीतर होगा। यही भरोसा किसी भी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की सबसे बड़ी ताकत होता है।

ग्रामीण क्षेत्रों के लिए वरदान

छत्तीसगढ़ का बड़ा हिस्सा ग्रामीण और वनांचल क्षेत्रों में फैला हुआ है। ऐसे क्षेत्रों में सरकारी सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करना हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। "सेवा सेतु" ने इस चुनौती को काफी हद तक कम किया है। लोक सेवा केंद्रों और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों के लोग भी अब आसानी से सरकारी सेवाओं का लाभ ले पा रहे हैं। यह पहल केवल तकनीकी सुधार नहीं, बल्कि सामाजिक समावेशन का भी उदाहरण है। इससे गरीब, ग्रामीण और वंचित वर्गों को प्रशासनिक प्रक्रियाओं में बराबरी का अवसर मिला है।

डिजिटल क्रांति की नई पहचान

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सरकार की यह पहल दर्शाती है कि छत्तीसगढ़ केवल योजनाओं की घोषणा तक सीमित नहीं है, बल्कि परिणाम आधारित शासन की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। "सेवा सेतु" ने प्रशासनिक सेवाओं को आधुनिक, पारदर्शी और जनसुलभ बनाकर राज्य की नई पहचान गढ़ने का कार्य किया है। यदि इसी गति और प्रतिबद्धता के साथ सुधार जारी रहे, तो आने वाले समय में छत्तीसगढ़ का यह मॉडल देश के अन्य राज्यों के लिए भी प्रेरणा बन सकता है। डिजिटल सुशासन की दिशा में यह पहल केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि आम नागरिकों के जीवन में वास्तविक परिवर्तन लाने वाला प्रयास है।

सुशासन की मजबूत होती नींव

आज छत्तीसगढ़ में "सेवा सेतु" के माध्यम से जो परिवर्तन दिखाई दे रहा है, वह मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की दूरदर्शी सोच और सुशासन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का परिणाम है। प्रशासनिक सेवाओं को सरल, पारदर्शी और समयबद्ध बनाना किसी भी राज्य की प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक होता है। छत्तीसगढ़ ने इस दिशा में मजबूत कदम बढ़ाए हैं। "सेवा सेतु" ने यह साबित कर दिया है कि जब राजनीतिक इच्छाशक्ति, तकनीकी नवाचार और जनहित की भावना एक साथ काम करती है, तब शासन व्यवस्था वास्तव में जनता के जीवन को आसान और बेहतर बना सकती है। यही कारण है कि आज यह पहल छत्तीसगढ़ में डिजिटल क्रांति और सुशासन के नए अध्याय के रूप में देखी जा रही है।

सुशासन तिहार के तहत मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का कोसला धाम दौरा

-शशि पांडे

जगत प्रवाह. रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सुशासन तिहार के तहत अचानक जांजगीर-चांपा जिले के पामगढ़ विकासखंड अंतर्गत ग्राम कोसला पहुंचे। यहां उन्होंने प्रसिद्ध माता कौशल्या मंदिर में पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि एवं छत्तीसगढ़ की खुशहाली के लिए प्रार्थना की। मुख्यमंत्री के मंदिर परिसर पहुंचने पर स्थानीय जनप्रतिनिधियों, मंदिर सेवा समिति एवं ग्रामीणों द्वारा पारंपरिक लोकनृत्य और उत्साहपूर्ण स्वागत किया गया। इस अवसर पर वित्त मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री ओ.पी. चौधरी भी उनके साथ उपस्थित रहे। मंदिर सेवा समिति की ओर से मुख्यमंत्री साय को माता कौशल्या मंदिर का आकर्षक छायाचित्र स्मृति स्वरूप भेंट किया गया। साथ ही समिति के सदस्यों ने केंद्र सरकार की प्रसाद योजना में कोसला धाम को शामिल करने की मांग को लेकर ज्ञापन भी सौंपा। मुख्यमंत्री ने मंदिर परिसर का अवलोकन किया और स्थानीय श्रद्धालुओं से भी आत्मीय संवाद किया। उनके अचानक आगमन से क्षेत्र में उत्साह का माहौल रहा। इस अवसर पर श्रद्धालु, ग्रामीणजन उपस्थित थे।

विधायक अभिजीत शाह के अथक प्रयासों से टिमरनी विधानसभा क्षेत्र को 19 नयी सड़कों की सौगात

-प्रमोद बरसले

जगत प्रवाह. टिमरनी। विधायक अभिजीत शाह के अथक प्रयासों एवं मध्यप्रदेश टिमरनी विधानसभा में लगातार उठाई गई जनहित की आवाज का परिणाम है कि pmgSy योजना के अन्तर्गत टिमरनी विधानसभा क्षेत्र को कुल 102.41 किलोमीटर लम्बाई की 19 नयी सड़कों की ऐतिहासिक सौगात प्राप्त हुई है। इन सड़कों के निर्माण से दूरस्थ ग्रामों, पहाड़ी क्षेत्रों एवं आदिवासी बहुल बसावटों को मुख्य मार्गों से सीधा सम्पर्क मिलेगा जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और आवागमन की सुविधाएं और अधिक सशक्त होगी। जहां वर्षों तक विकास की रफ्तार थमी नहीं और विकास कार्य जो बहुत पहले ही हों जाने चाहिए थे। बिजली, पानी, सड़कों का जाल बिछ जाना चाहिए था। वही अब विधायक कुंवर अभिजीत शाह के प्रयासों से टिमरनी विधानसभा विकास की नई दिशा में लगातार आगे बढ़ रही है।

किसानों की आय बढ़ाने, जैविक खेती, वैज्ञानिक तकनीक और विपणन व्यवस्था मजबूत होः मुख्यमंत्री धामी

-प्रमोद कुमार

जगत प्रवाह. देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय में आयोजित उत्तराखण्ड कृषि उत्पादन विपणन बोर्ड की बैठक में अधिकारियों को निर्देश दिये कि राज्य के प्रत्येक विकासखण्ड से एक-एक गांव का चयन कर उसे कृषि एवं उद्यान के क्षेत्र में आदर्श गांव के रूप में विकसित किया जाए, ताकि स्थानीय संसाधनों, पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक कृषि पद्धतियों के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाया जा सके। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों, जलवायु, भूमि की गुणवत्ता और स्थानीय आवश्यकताओं का अध्ययन करते हुए यह सुनिश्चित किया जाए कि किस क्षेत्र में कौन-से फल, सब्जियां अथवा अन्य कृषि उत्पाद अधिक बेहतर ढंग से विकसित किए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि क्षेत्र विशेष की विशेषताओं के अनुरूप योजनाबद्ध कार्य कर राज्य को कृषि और बागवानी के क्षेत्र में नई पहचान दिलाई जा सकती है। मुख्यमंत्री ने उत्तराखण्ड कृषि उत्पादन विपणन बोर्ड को आगामी तीन वर्षों की विस्तृत कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश देते हुए कहा कि सभी योजनाओं में किसानों के हित सर्वोपरि होने चाहिए। उन्होंने कहा कि कृषि उत्पादन बढ़ाने, खेती की लागत कम करने और किसानों की आय में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रयास किए जाएं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गोविन्द बल्लभ पन्त, कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर तथा अन्य संस्थानों के सहयोग से प्रदेशभर में किसानों के लिए बड़े स्तर पर कृषि गोष्ठियों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को उन्नत कृषि तकनीक, बेहतर खेती के तरीकों तथा उच्च गुणवत्ता वाले पौध, बीज और खाद उपलब्ध कराई जाए। मुख्यमंत्री ने विशेष रूप से तिलहनी फसलों जैसे सरसों, तिल, सूरजमुखी, सोयाबीन के उत्पादन को बढ़ावा देने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि किसानों को इन फसलों के प्रति जागरूक किया जाए, जिससे कृषि विविधीकरण को बढ़ावा मिले और किसानों को बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त हो।

अवैध शराब की बिक्री पर कार्यवाही को लेकर ग्रामीणों ने लगाई गुहार

-नरेन्द्र दीक्षित

जगत प्रवाह. नर्मदापुरम। जिले के ग्रामीण अंचलों में भी शराब माफियाओं द्वारा अवैध शराब कारोबार सक्रिय रूप से किया जा रहा है, जिससे ग्रामीण क्षेत्र का माहौल खराब हो रहा है। अब शराब की अवैध बिक्री पर पाबंदी लगाने को लेकर डोलरिया तहसील के ग्रामीण जनों ने कलेक्टर की जनसुनवाई में पहुंचकर आवेदन देकर गुहार लगाई। कलेक्टर सोमेश मिश्रा द्वारा मामले की गंभीरता को देखते हुए जिला आबकारी अधिकारी को कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। जनसुनवाई में पहुंचे ग्रामीणों ने कहा कि हम सभी ग्रामवासी तहसील डोलरिया के आपसे अनुरोध करते है कि हमारे ग्राम डोलरिया व आसपास गाँव में अवैध रूप से शराब के ठेकेदार द्वारा गाँव-गाँव दबाब बनाकर कारोबार संचालित किया जा रहा है। छोटे छोटे गाँवो में दुकान से हटकर अवैध शराब का कारोबार चल रहा है जिससे गाँवो में छोटे छोटे बच्चे, बुजुर्ग, महिलाएँ काफी परेशान है। स्कूली बच्चे आने जाने वाली छात्राएं काफी परेशान है। अवैध शराब की बिक्री से गाँव के बच्चे और नौजवान ,मजदूर वर्ग के परिवार शराबखोरी का शिकार हो रहे हैं। जिससे आये दिन नशे में दुघटनाएँ हो रही है। शराब ठेकेदार के आदमियों द्वारा गांवों में चार पहिया वाहनों के द्वारा अवैध रूप से शराब पटकी जा रही है। जिससे नौजवानों,छोटे किसान, मजदूरों को आदी बनाकर उधारी देकर कर्ज में लाद कर अवैध शराब कारोबार में लगाया जा रहा है। जिससे लड़ाई, झगड़े और परिवार बर्बाद हो रहे हैं।

बंगाल विजय के असली शिल्पकार कैलाश विजयवर्गीय

(पेज 1 का शेष)

वर्षों तक वामपंथ और फिर तृणमूल कांग्रेस के प्रभाव में रहने वाले बंगाल में बीजेपी का मजबूत होकर उभरना किसी सामान्य राजनीतिक घटना की तरह नहीं देखा जा सकता। यह परिवर्तन एक लंबी राजनीतिक साधना, निरंतर संघर्ष और मजबूत रणनीति का परिणाम रहा। इस ऐतिहासिक परिवर्तन के केंद्र में यदि किसी एक नेता का नाम सबसे प्रमुखता से उभरता है, तो वह हैं मध्यप्रदेश सरकार के वरिष्ठ मंत्री और भाजपा के कुशल संगठनकर्ता कैलाश विजयवर्गीय। पश्चिम बंगाल में भाजपा की मजबूत उपस्थिति और सत्ता तक पहुंचने की राह को आसान बनाने में कैलाश विजयवर्गीय की भूमिका को राजनीतिक विश्लेषक भी अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। उन्होंने ऐसे समय में बंगाल की जिम्मेदारी संभाली थी, जब भाजपा वहां राजनीतिक रूप से सीमित प्रभाव वाली पार्टी मानी जाती थी। उस समय भाजपा का संगठन जमीनी स्तर पर कमजोर था और कार्यकर्ताओं को कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। लेकिन विजयवर्गीय ने परिस्थितियों को चुनौती मानते हुए बंगाल में पार्टी के लिए नई ऊर्जा और नई दिशा तैयार की। 2021 में जो पार्टी 03 सीटों तक सिमटी थी वह कैलाश जी के कारण 77 तक पहुंची।

जब विजयवर्गीय पर टीएमसी के कार्यकर्ताओं ने हमला किया, उसे याद कर आज भी भावुक हो जाते हैं कैलाश जी

लगभग पांच वर्ष पहले जब भाजपा नेतृत्व ने कैलाश विजयवर्गीय को बंगाल का प्रभारी बनाकर भेजा था, तब बहुत कम लोगों ने यह कल्पना की थी कि पार्टी इतनी तेजी से राज्य की राजनीति में अपनी पैठ बना लेगी। बंगाल प्रभार के दौरान वे तमाम मुसीबतों को झेलते हुए अपने मिशन में लगे रहे। एक चुनावी सभा में जाते समय टीएमसी के कार्यकर्ताओं ने उनके काफिले पर पत्थरों से हमला किया था। जिसमें वह बाल-बाल बचे थे। आज भी कैलाश जी उस मंजर को याद करके बेचैन हो जाते हैं। उन पर फर्जी आपराधिक मामले दर्ज हुए, व्यक्तिगत आरोप लगाये गए लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। विजयवर्गीय ने बंगाल को केवल चुनावी राज्य की तरह नहीं देखा, बल्कि वहां के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक ताने-बाने को गहराई से समझने का प्रयास किया। उन्होंने बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत करने, कार्यकर्ताओं में आत्मविश्वास भरने और आम जनता तक पार्टी की विचारधारा पहुंचाने का काम लगातार किया।

मैंने 2020 में देखा भय, आतंक और गुंडागर्दी का मंजर

भोपाल से 1425 किलोमीटर का सफ़र कर के जब मैं 2021 के विधानसभा चुनाव की रिपोर्टिंग करने पश्चिम बंगाल पहुँची तो इस राज्य में घुसते ही मुझे भय और एक अजीब सी बेचैनी का एहसास हुआ। कोरोना की जद से बाहर आ रहे कोलकाता शहर में एक अजीब सा सन्नाटा रहता था। जैसे कोलकाता की मैंने कल्पना की थी ये वैसा नहीं था। मैंने सोचा कि कैसे कैलाश जी ऐसी जगह पर रह रहे हैं। जहाँ ना लोग अपने, ना बोली अपनी और ना ही सोच अपनी। लेकिन तब मुझे समझ आया कि पश्चिम बंगाल में ममता के चक्रव्यूह को तोड़ने और उसके गढ़ को भेदने के लिए अभिमन्यु और शिवाजी की तरह साहसी और निर्भीक व्यक्ति की जरूरत थी जो कैलाश विजयवर्गीय में देखने को मिली। मैंने वहाँ विभिन्न क्षेत्रों में जाकर चुनावी माहौल का जायज़ा लिया। कई जगह जाकर इंटरव्यू लिए। तब एक बात स्पष्ट होती जा रही थी कि पार्टी ने कैलाश जी को अत्यंत कठिन काम सौंपा है। उस समय पश्चिम बंगाल की जनता दो धड़ों में विभाजित थी। एक ममता के घोर समर्थक और एक ममता से बेहद आतंकित। दोनों ही स्थितियों में कैलाश जी के लिए परिस्थितियाँ विकट थीं। लेकिन उनका साहस और लक्ष्य के प्रति समर्पण इन सभी पर भारी था। वे बंगाल की धरती पर टिके रहे और अड़िग रहे और वामपंथी उग्रवाद के उस गढ़ में सेंध लगाने में सफल हुए। यकीनन पश्चिम बंगाल में बीजेपी की जीत के लिए बीज बोने का कठिन कार्य कैलाश जी द्वारा ही किया गया था।

बंगाल फतह में विजयवर्गीय का विशेष योगदान

बंगाल की राजनीति हमेशा से संघर्षपूर्ण रही है। वहां राजनीतिक हिंसा, कार्यकर्ताओं पर हमले और विरोधी दलों के लिए कठिन माहौल जैसी परिस्थितियां किसी से छिपी नहीं हैं। भाजपा कार्यकर्ताओं को भी लंबे समय तक इसी प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ऐसे कठिन समय में विजयवर्गीय लगातार कार्यकर्ताओं के बीच खड़े दिखाई दिए। यही कारण रहा कि भाजपा धीरे-धीरे बंगाल के गांवों, कस्बों और शहरों तक अपनी मजबूत पकड़ बनाने में सफल हुई। बंगाल में उन्होंने छोटे-छोटे कार्यकर्ता सम्मेलनों, जनसंपर्क अभियानों और बूथ प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया। परिणाम यह हुआ कि जो भाजपा कभी ईकाई के आंकड़े तक सीमित थी, वह देखते ही देखते 77 सीटों तक पहुंचने में सफल हो गई। वर्षों तक बंगाल की जनता भ्रष्टाचार, राजनीतिक हिंसा, बेरोजगारी और प्रशासनिक पक्षपात जैसे मुद्दों से परेशान रही। लोगों के भीतर परिवर्तन की इच्छा तो थी, लेकिन उन्हें एक मजबूत विकल्प की तलाश थी। भाजपा ने इसी जनभावना को समझते हुए जनता के बीच अपनी उपस्थिति मजबूत की।

मध्यप्रदेश में भी संकटमोचन की भूमिका में विजयवर्गीय

कैलाश विजयवर्गीय ने केवल बंगाल, हरियाणा तक अपनी कुशल संगठन क्षमता को प्रदर्शित नहीं किया बल्कि वह मध्यप्रदेश में भी एक संकटमोचन की भूमिका में रहते हैं। प्रदेश में जब-जब भी पार्टी पर संकट पैदा होता है वह सबसे आगे खड़े दिखाई देते हैं और अपनी कुशलता से समस्या का निवारण कर देते हैं। सत्ता और संगठन में मजबूत पकड़ के चलते वह एक प्रभावी नेता की भूमिका में नजर आते हैं।

सम्पादकीय

मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने दिया भोजशाला पर फैसला

भोजशाला को लेकर मध्यप्रदेश हाईकोर्ट का हालिया फैसला केवल एक कानूनी निर्णय भर नहीं है, बल्कि यह उस संवेदनशील विषय पर न्यायिक संतुलन का उदाहरण भी है, जो वर्षों से इतिहास, आस्था और विवाद के केंद्र में रहा है। भोजशाला का मुद्दा लंबे समय से प्रदेश ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बना हुआ था। ऐसे में अदालत का निर्णय स्वाभाविक रूप से सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। धार स्थित भोजशाला को हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदाय अपनी-अपनी आस्था से जोड़ते रहे हैं। एक पक्ष इसे मां वाग्देवी का प्राचीन मंदिर मानता है, जबकि दूसरा पक्ष इसे कमाल मौला मस्जिद के रूप में देखता है। वर्षों से यह विवाद न्यायालयों और प्रशासनिक व्यवस्थाओं के बीच संतुलन की कसौटी बना रहा। कई बार यह मामला सामाजिक तनाव का कारण भी बना, लेकिन इसके बावजूद प्रदेश में शांति और संयम बनाए रखने के प्रयास लगातार होते रहे।

मध्यप्रदेश हाईकोर्ट का फैसला इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि उसने संवेदनशीलता और तथ्यों के आधार पर मामले को देखने का प्रयास किया है। न्यायपालिका का दायित्व केवल कानूनी व्याख्या तक सीमित नहीं होता, बल्कि उसे सामाजिक समरसता और संवैधानिक मूल्यों को भी ध्यान में रखना पड़ता है। अदालत ने अपने निर्णय के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया है कि विवादों का समाधान कानून और व्यवस्था के दायरे में ही संभव है। भोजशाला विवाद का एक बड़ा पक्ष इतिहास से भी जुड़ा हुआ है। इतिहासकारों और पुरातत्व विशेषज्ञों के बीच इस स्थल की वास्तविक पहचान को लेकर लंबे समय से मतभेद रहे हैं। यही कारण है कि समय-समय पर पुरातत्व सर्वेक्षण और दस्तावेजों के आधार पर विभिन्न दावे सामने आते रहे। लेकिन किसी भी ऐतिहासिक विवाद का समाधान केवल भावनाओं के आधार पर नहीं किया जा सकता। इसके लिए तथ्यों, प्रमाणों और न्यायिक प्रक्रिया का सम्मान आवश्यक होता है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों को लेकर संवेदनशीलता स्वाभाविक है। लेकिन लोकतंत्र की मजबूती इसी में है कि ऐसे विषयों पर अंतिम भरोसा न्यायपालिका और संविधान पर रखा जाए। यदि हर विवाद सड़क या भावनात्मक उन्माद के आधार पर तय होने लगे, तो सामाजिक संतुलन बनाए रखना कठिन हो जाएगा। इसलिए हाईकोर्ट का यह फैसला संस्थागत व्यवस्था पर विश्वास को मजबूत करने वाला माना जा सकता है। राजनीतिक दृष्टि से भी भोजशाला का मुद्दा समय-समय पर चर्चाओं में रहा है। चुनावी माहौल में ऐसे विषय अक्सर राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बन जाते हैं। विभिन्न दल अपने-अपने दृष्टिकोण से इसे प्रस्तुत करते रहे हैं। लेकिन यह आवश्यक है कि धार्मिक और ऐतिहासिक मुद्दों को केवल राजनीतिक लाभ-हानि के नजरिए से न देखा जाए। समाज को विभाजित करने के बजाय ऐसे मामलों में संवाद, संवेदनशीलता और कानूनसम्मत समाधान को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

प्रदेश सरकार और प्रशासन के सामने अब सबसे बड़ी जिम्मेदारी यह होगी कि अदालत के फैसले के बाद शांति और सौहार्द का वातावरण बनाए रखा जाए। किसी भी पक्ष की भावनाओं को भड़काने या सामाजिक तनाव बढ़ाने वाले प्रयासों पर सख्ती से नियंत्रण आवश्यक होगा। मध्यप्रदेश लंबे समय से सामाजिक समरसता और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए पहचाना जाता रहा है और इस पहचान को बनाए रखना सभी पक्षों की जिम्मेदारी है। भोजशाला विवाद हमें यह भी सिखाता है कि इतिहास की व्याख्या और वर्तमान की जरूरतों के बीच संतुलन बनाए रखना कितना जरूरी है। अतीत को लेकर असहमति हो सकती है, लेकिन वर्तमान और भविष्य की दिशा सामाजिक सद्भाव, न्याय और संवैधानिक मूल्यों से ही तय होगी। अदालत का फैसला चाहे किसी पक्ष के लिए संतोष का विषय हो या असहमति का, लोकतांत्रिक व्यवस्था में उसका सम्मान करना ही परिपक्व समाज की पहचान है।

भोजशाला पर हाईकोर्ट का निर्णय केवल एक विवाद का कानूनी अध्याय नहीं है, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र की उस शक्ति को भी दर्शाता है, जहां जटिल और संवेदनशील मुद्दों का समाधान न्यायिक प्रक्रिया के माध्यम से खोजने का प्रयास किया जाता है। अब आवश्यकता इस बात की है कि सभी पक्ष संयम, संवाद और संवैधानिक मर्यादा का पालन करते हुए आगे बढ़ें, ताकि प्रदेश में शांति और सामाजिक सौहार्द की भावना और अधिक मजबूत हो सके।

सियासी गहमागहमी

कमलनाथ राज्यसभा में रखेंगे प्रदेश कांग्रेस का पक्ष

कमलनाथ का संभावित रूप से राज्यसभा पहुंचना मध्यप्रदेश कांग्रेस के लिए राजनीतिक और रणनीतिक दोनों दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। लंबे समय से प्रदेश कांग्रेस एक ऐसे अनुभवी चेहरे की तलाश में दिखाई दे रही थी, जो राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी की बात को प्रभावी ढंग से रख सके और साथ ही प्रदेश के मुद्दों को भी मजबूती के साथ उठा सके। ऐसे में कमलनाथ का नाम स्वाभाविक रूप से सबसे आगे नजर आता है। कमलनाथ उन चुनिंदा नेताओं में शामिल हैं, जिनके पास संगठन, सत्ता और संसदीय राजनीति का लंबा अनुभव है। केंद्र सरकार में कई महत्वपूर्ण मंत्रालय संभालने से लेकर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री पद तक का उनका राजनीतिक सफर उन्हें एक अनुभवी और व्यावहारिक नेता के रूप में स्थापित करता है। यही अनुभव अब राज्यसभा में कांग्रेस के लिए उपयोगी साबित हो सकता है। प्रदेश कांग्रेस पिछले कुछ वर्षों से लगातार संगठनात्मक चुनौतियों और राजनीतिक संघर्षों से गुजर रही है। ऐसे समय में कमलनाथ की सक्रिय भूमिका कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा भर सकती है। राज्यसभा में उनकी मौजूदगी केवल संसद तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह प्रदेश कांग्रेस के लिए एक मजबूत राजनीतिक संदेश भी होगी कि पार्टी अभी भी अनुभवी नेतृत्व पर भरोसा बनाए हुए है।

मोदी पर किताब लिखकर क्या पाना चाहते हैं शिवराज?

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के व्यक्तित्व और नेतृत्व पर किताब लिखने की चर्चा राजनीतिक गलियारों में कई तरह के संकेत दे रही है। इसे केवल एक साहित्यिक प्रयास मानना शायद पर्याप्त नहीं होगा, क्योंकि भारतीय राजनीति में ऐसे कदम अक्सर राजनीतिक संदेश और वैचारिक प्रतिबद्धता दोनों को साथ लेकर चलते हैं। शिवराज सिंह चौहान लंबे समय से भाजपा के उन नेताओं में शामिल रहे हैं, जिन्होंने संगठन और सरकार दोनों स्तरों पर अपनी अलग पहचान बनाई है। ऐसे में मोदी पर किताब लिखना उनके लिए केवल प्रशंसा का माध्यम नहीं, बल्कि भाजपा की वैचारिक राजनीति और नेतृत्व मॉडल को प्रस्तुत करने का प्रयास भी माना जा सकता है। संभवतः शिवराज इस पुस्तक के जरिए प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व, निर्णय क्षमता और जनसंपर्क शैली को नए राजनीतिक कार्यकर्ताओं तक पहुंचाना चाहते हैं। इसके साथ ही यह प्रयास शिवराज की राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय उपस्थिति बनाए रखने की रणनीति के रूप में भी देखा जा रहा है। मोदी युग की राजनीति में नेतृत्व के साथ वैचारिक सामंजस्य दिखाना भाजपा नेताओं के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। ऐसे में यह किताब शिवराज की राजनीतिक प्रतिबद्धता और संगठन के प्रति उनके भरोसे का सार्वजनिक संदेश भी बन सकती है।

हफ्ते का कार्टून

ट्वीट-ट्वीट

NEET के 22 लाख बच्चों के साथ धोखा हुआ है। पर मोदी जी एक शब्द भी नहीं बोल रहे।

धर्मेंद्र प्रधान जी को अभी हटाइए, या जवाबदेही खुद लीजिए।

-राहुल गांधी

कांग्रेस नेता @RahulGandhi

मध्य प्रदेश में प्रशासनिक ढांचा पूरी तरह चरमरा गया है।

अब स्कूल शिक्षा विभाग ने 3 लाख शिक्षकों को अपना कर्मचारी मानने से ही इंकार कर दिया है। इस कारण इन शिक्षकों की पुरानी पेंशन और 20 साल की वरिष्ठता पर ही प्रश्नचिन्ह लग गया है।

-कमलनाथ

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष

@OfficeOfKNath

राजवीरों की बात

जननायक बनने की राह पर विजय

थलापति: सिनेमा से राजनीति तक का सफर

समता पाठक/जगत प्रवाह

दक्षिण भारतीय सिनेमा के लोकप्रिय अभिनेता और युवा दिलों की धड़कन विजय, जिन्हें उनके प्रशंसक प्रेम से "थलापति" कहकर पुकारते हैं, आज केवल फिल्मी दुनिया तक सीमित नाम नहीं रह गए हैं। अभिनय की चमकदार दुनिया में अपार सफलता प्राप्त करने के बाद उन्होंने सामाजिक सरोकारों और जनसेवा के उद्देश्य से राजनीति की राह चुनी है। उनका जीवन संघर्ष, लोकप्रियता, अनुशासन और समाज के प्रति समर्पण का प्रेरणादायक उदाहरण माना जाता है। विजय का जन्म 22 जून 1974 को तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में हुआ। उनके पिता एस. ए. चंद्रशेखर प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक रहे हैं, जबकि माता शोभा चंद्रशेखर गायिका और लेखिका हैं। कला और सिनेमा का वातावरण उन्हें बचपन से मिला, जिसके कारण अभिनय के प्रति उनका झुकाव प्रारंभ से ही दिखाई देने लगा था। उन्होंने बाल कलाकार के रूप में फिल्मों में काम करना शुरू किया और धीरे-धीरे अपनी मेहनत और प्रतिभा के दम पर तमिल फिल्म उद्योग में मजबूत पहचान बनाई।

1990 के दशक में विजय ने बतौर नायक अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की। शुरुआती संघर्षों के बाद उन्होंने लगातार ऐसी फिल्में दीं, जिन्होंने उन्हें तमिल सिनेमा का सुपरस्टार बना दिया। उनकी फिल्मों में एक्शन, सामाजिक संदेश, पारिवारिक भावनाएं और युवाओं को प्रेरित करने वाले संवाद प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। यही कारण है कि वे केवल अभिनेता नहीं, बल्कि करोड़ों युवाओं के आदर्श बन गए। उनकी लोकप्रिय फिल्मों में घिल्ली, थुप्पाक्की, मर्सल, बिगिल, मास्टर और लियो जैसी फिल्में शामिल हैं। इन फिल्मों ने न केवल बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड बनाए, बल्कि विजय की जनप्रिय छवि को भी और मजबूत किया। उनकी फिल्मों में अक्सर भ्रष्टाचार, शिक्षा, किसानों की समस्याएं और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों को उठाया गया, जिसने आम लोगों के बीच उन्हें विशेष पहचान दिलाई।

विजय की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सादगी और लोगों से जुड़ाव माना जाता है। फिल्मी सुपरस्टार होने के बावजूद वे आम लोगों के बीच सहज रूप से दिखाई देते हैं। सामाजिक कार्यों में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य और जरूरतमंदों की सहायता के लिए वे समय-समय पर विभिन्न सामाजिक गतिविधियों से जुड़े रहे हैं। उनके प्रशंसक संगठन भी समाजसेवा के कार्यों में सक्रिय रहते हैं। राजनीति में उनकी रुचि लंबे समय से चर्चा का विषय रही थी। आखिरकार उन्होंने सक्रिय राजनीति में प्रवेश कर अपनी राजनीतिक पार्टी तमिलगा वेट्री कज़गम की घोषणा की। विजय ने स्पष्ट किया कि उनका उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि युवाओं, किसानों और आम नागरिकों के हितों के लिए काम करना है। उन्होंने राजनीति को जनसेवा का माध्यम बताते हुए नई सोच और पारदर्शी व्यवस्था की आवश्यकता पर जोर दिया।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि विजय की सबसे बड़ी ताकत उनकी विशाल जन स्वीकृति और युवाओं के बीच लोकप्रियता है। दक्षिण भारत में उनकी सभाओं और कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं। उनकी राजनीतिक शैली में आक्रामकता से अधिक संवाद और जनसंपर्क को महत्व दिया जाता है। विजय का व्यक्तित्व केवल स्टारडम तक सीमित नहीं है। वे अनुशासन, मेहनत और सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश देने वाले व्यक्तित्व के रूप में पहचाने जाते हैं। उन्होंने अपने करियर में यह साबित किया कि लोकप्रियता का उपयोग समाजहित में भी किया जा सकता है। आज विजय थलापति भारतीय राजनीति में उभरते हुए उन चेहरों में गिने जा रहे हैं, जिनसे युवा पीढ़ी नई उम्मीदें जोड़ रही है। सिनेमा के पर्दे से निकलकर जनता के बीच पहुंचने वाला यह अभिनेता अब जननेता बनने की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है।

मप्र कांग्रेस को राज्यसभा की सीट बचानी है तो कमलनाथ पर करना होगा भरोसा

(पेज 1 का शेष)

सूत्रों के अनुसार कांग्रेस के लगभग 06 विधायक बीजेपी के संपर्क में हैं और राज्यसभा में क्रॉस वोटिंग कर सकते हैं। यह डर कांग्रेस को सताने लगा है। गौरतलब है कि विधानसभा चुनाव 2023 के बाद कांग्रेस के पास 65 विधायकों की ताकत थी, लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में यह संख्या 62 के आसपास सिमट गई है। राज्यसभा की एक सीट जीतने के लिए 58 विधायकों का समर्थन आवश्यक है, जो कांग्रेस के पास है। हालांकि, यह गणित जितना सरल दिखाई देता है, उतना है नहीं। हरियाणा और ओडिशा जैसे राज्यों में हुए क्रॉस वोटिंग के अनुभव ने कांग्रेस को सतर्क कर दिया है। ऐसे में पार्टी किसी भी प्रकार का जोखिम उठाने के मूड में नहीं है। यहीं पर कमलनाथ का नाम सबसे भरोसेमंद विकल्प के रूप में उभरता है। उन्हें 'मैनेजमेंट का माहिर' माना जाता है ऐसा नेता जो न केवल अपने विधायकों को एकजुट रख सकता है, बल्कि विरोधी खेमे की चालों को भी निष्प्रभावी करने की क्षमता रखता है।

वर्तमान परिदृश्य में जब कांग्रेस संगठनात्मक चुनौतियों, नेतृत्व के अभाव और रणनीतिक असमंजस से जूझती नजर आ रही है, तब एक बार फिर पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ का नाम सबसे भरोसेमंद चेहरे के रूप में उभरकर सामने आ रहा है। यह केवल एक व्यक्ति का समर्थन नहीं, बल्कि उस अनुभव, दृष्टि और राजनीतिक परिपक्वता पर भरोसा है, जिसने प्रदेश की राजनीति को कई बार नई दिशा दी है।

आज भी बरकरार है जमीन से जुड़ा नेतृत्व

राजनीति में लोकप्रियता केवल पद से नहीं, बल्कि जनता से जुड़ाव से तय होती है। कमलनाथ ने सरकार जाने के बाद भी अपने राजनीतिक और सामाजिक संपर्क को कमजोर नहीं होने दिया। वे लगातार जनता के बीच सक्रिय रहे, समस्याओं को सुना और संगठन को मजबूत करने का प्रयास किया। यही कारण है कि आज भी वे कांग्रेस के उन नेताओं में गिने जाते हैं, जिनकी स्वीकार्यता सभी वर्गों में बनी हुई है। संगठन के भीतर भी वे एक ऐसे नेता हैं, जो विभिन्न गुटों को एक मंच पर ला सकते हैं।

रणनीति और नेतृत्व की कसौटी

आगामी 2028 के विधानसभा चुनाव कांग्रेस के लिए निर्णायक साबित होंगे। ऐसे में पार्टी को केवल उत्साह नहीं, बल्कि ठोस रणनीति और मजबूत नेतृत्व की आवश्यकता है। कमलनाथ इस कसौटी पर खरे उतरते दिखाई देते हैं। उनका अनुभव, चुनावी प्रबंधन की समझ और राष्ट्रीय स्तर पर संपर्क कांग्रेस के लिए बड़ा लाभ साबित हो सकता है। वे केवल चुनाव लड़ने वाले नेता नहीं, बल्कि चुनाव जिताने वाले रणनीतिकार के रूप में जाने जाते हैं। यदि कांग्रेस को सत्ता में वापसी करनी है, तो उसे एक ऐसे चेहरे पर भरोसा करना होगा, जो संगठन को एकजुट रख सके, कार्यकर्ताओं में विश्वास जगा सके और जनता के बीच मजबूत संदेश दे सके।

पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं के गुटबाजी पर नियंत्रण

मध्यप्रदेश कांग्रेस की एक बड़ी चुनौती गुटबाजी रही है। कई बार यह आंतरिक मतभेद चुनावी परिणामों को प्रभावित करते हैं। उनकी विशेषता यह रही है कि वे संगठन के विभिन्न वर्गों और नेताओं के बीच संतुलन बनाने में सक्षम रहे हैं। उनकी नेतृत्व शैली में संवाद, समन्वय और सामंजस्य की झलक मिलती है, जो किसी भी बड़े संगठन के लिए आवश्यक होती है। यदि पार्टी उन्हें फिर से केंद्रीय भूमिका देती है, तो यह गुटबाजी को कम करने में सहायक हो सकता है।

राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर प्रभाव

कमलनाथ का अनुभव केवल राज्य तक सीमित नहीं है। वे लंबे समय तक केंद्र की राजनीति में सक्रिय रहे हैं और कई महत्वपूर्ण मंत्रालयों की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। इसका लाभ यह है कि वे राज्य और केंद्र दोनों स्तरों पर प्रभावी संवाद स्थापित कर सकते हैं। राज्यसभा या अन्य किसी मंच के माध्यम से उनकी सक्रियता कांग्रेस को राष्ट्रीय स्तर पर भी मजबूती दे सकती है। साथ ही, वे प्रदेश के मुद्दों को राष्ट्रीय मंच पर प्रभावी ढंग से उठा सकते हैं।

विजन और क्रियान्वयन का संगम

किसी भी राजनीतिक दल की सफलता केवल वादों पर नहीं, बल्कि उनके क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। कमलनाथ का राजनीतिक जीवन इस बात का प्रमाण है कि वे विजन और क्रियान्वयन के बीच संतुलन बनाने में सक्षम हैं। यदि कांग्रेस उनके नेतृत्व में 2028 की तैयारी करती है, तो यह केवल एक चुनावी रणनीति नहीं, बल्कि एक व्यापक विकास दृष्टि का हिस्सा हो सकता है। मध्यप्रदेश कांग्रेस के सामने आज सबसे बड़ा सवाल नेतृत्व और रणनीति का है। ऐसे समय में कमलनाथ का अनुभव, उनकी लोकप्रियता और प्रशासनिक क्षमता पार्टी के लिए एक मजबूत आधार बन सकती है। वे केवल अतीत की उपलब्धियों के प्रतीक नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं का भी संकेत हैं। यदि कांग्रेस उन्हें केंद्र में रखकर अपनी रणनीति तैयार करती है, तो 2028 का चुनाव उसके लिए एक नई शुरुआत साबित हो सकता है।

ईरान-अमेरिका युद्ध में तेल की बर्बादी

प्रमोद भार्गव
वरिष्ठ पत्रकार

अमेरिका-ईरान के बीच जंग के मैदान बने समुद्र में तेल खेल का औजार बन गया है। अमेरिकी नाकाबंदी के चलते एक महीने के भीतर ईरान के 58 तेल टैंकर होर्मुज जलडमरूमध्य पार नहीं कर पाए। इस कारण प्रतिदिन 30 लाख बैरल से ज्यादा कच्चा तेल समुद्र में बहा रहा है। हर दिन नष्ट किए जा रहे इस तेल की कीमत 2800 करोड़ रुपए है। ईरान को ऐसा इसलिए करना पड़ रहा है, क्योंकि उसकी तीन करोड़ बैरल तेल भंडारण की क्षमता पूरी हो चुकी है। ईरान के पास 3500 ऐसे तेल के कुएं हैं, जिनसे निरंतर तेल का उत्पादन जरूरी है। यदि तेल निकालना बंद कर दिया गया तो इन कुओं से तेल का उत्पादन हमेशा के लिए बंद हो जाएगा। ऐसा इसलिए हो जाता है, क्योंकि ड्रिलिंग बंद कर देने से कुएं के भीतर डाली गई पाइपलानों में पानी-गैस भर जाती है। इन्हीं पाइपों से कच्चा तेल रिस-रिसकर आता है। तेल की चट्टानों के छेदों में वैक्स की परत जम जाने से तेल रिसना बंद हो जाता है। यह मोम जैसा प्राकृतिक या रासायनिक ठोस पदार्थ होता है। ईरान कच्चे तेल का 90 प्रतिशत निर्यात खार्ग द्वीप से करता है। यहीं ईरान के तेलों के भंडार ग्रह हैं। तेल की यह बर्बादी पच्चिम एषिया के देषों के लिए ऊर्जा का संकट तो बन ही रही है, समुद्री पर्यावरण भी तेजी से बिगड़ रहा है। इसीलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देष की जनता से अपील करनी पड़ी है कि इस संकट के दौरान पेट्रोल, डीजल, गैस और अन्य पेट्रोलियम उत्पादों का उपयोग कम से कम करें।

यूरोपियन स्पेस एजेंसी के सेंटीनल सैटेलाइट डेटा और अमेरिकी मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार खरास की खाड़ी एवं होर्मुज स्ट्रेट के आसपास समुद्री पानी के सतह पर तेल की परतें देखी गई हैं। ये परतें कुवैत के लावन द्वीप, केषम द्वीप और खार्ग द्वीप के समुद्र में बड़े-बड़े धब्बों के आकार में देखी गई है। इनमें से एक धब्बा करीब 120 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है। विशेषज्ञों ने रडार डेटा की मदद से इसका विश्लेषण करते हुए कहा है कि सतह पर तैरता तेल लहरों को शांत कर देता है, जिससे रडार से ली गई तस्वीरों में काले और चिकने धब्बे दिखाई देते हैं। इस कारण यह आशंका बनी है कि ईरान समुद्र में तेल बर्बाद कर रहा है। यदि यह तेल लगातार छोड़ा जाता रहा तो इससे समुद्री जीवन और पर्यावरण को भारी नुकसान हो सकता है। फारस की खाड़ी के समुद्री क्षेत्रों में बड़ी संख्या में मछुआरे, कोरल रीफ और अन्य समुद्री जीव रहते हैं, जिन पर लाखों लोगों की आजीविका निर्भर है। यह तेल मछलियों के लिए जहर का काम कर सकता है। समुद्री पक्षियों को नुकसान पहुंचाता है और संवेदनशील समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को तबाह कर देता है। ऐसे में आक्सीजन की कमी हो जाती है और अनेक समुद्री जीव बेमौत मर जाते हैं। अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच छिड़ी जंग समुद्री पर्यावरण के लिए भारी संकट के रूप में पेश आ रहा है। यह संकट धरती से लेकर आसमान तक कहर ढहा रहा है। होर्मुज के संकरे मार्ग पर तेल की इस बर्बादी से पहले पेट्रोलियम पदार्थों से भरे करीब 20 जहाज नष्ट कर दिए गए गए थे। एक अनुमान के अनुसार इन टैंकरों में तीन लाख मीट्रिक टन तरल एलपीजी भरी हुई थी। एक बड़े गैस टेंकर में लगभग 45 हजार मीट्रिक टन एलपीजी होती है और एक बड़े गैस टैंकर से करीब 31 से 32 लाख घरेलू गैस सिलेंडर भरे जा सकते हैं।

पेट्रोलियम पदार्थ एक साथ मिट्टी, पानी और हवा को दूषित करते हुए मानव जीवन के लिए वरदान की बजाय अभिशाप साबित होने लग जाते हैं। वैसे भी दुनिया के समुद्री तटों पर पेट्रोलियम पदार्थों और औद्योगिक कचरे से भयावह पर्यावरणीय संकट पैदा हो रहे हैं। तेल के रिसाव, तेल टैंकों के टूटने व धोने से भी समुद्र का पर्यावरणीय पारिस्थितिकी-तंत्र (इकोसिस्टम) प्रभावित हो रहा है। यदि एक जहाज से भी तेल का रिसाव होता है तो पर्यावरण को बड़ी क्षति पहुंचती है। कुछ साल पहले जापान के टोकियों के तट पर 317 किमी की पट्टी पर तेल के फैलाव से जापान के तटवर्ती शहरों में हाहाकार मच गया था। रूस में बेलाय नदी के किनारे बिछी तेल पाइप लाइन से 150 मीट्रिक टन के रिसाव ने यूराल पर्वत पर्वत पर बसे ग्रामवासियों को पेय जल का संकट खड़ा कर दिया था। सैनजुआन जहाज के कोरल चट्टानों से टकरा जाने के कारण अटलांटिक तट पर करीब तीस लाख लीटर तेल का रिसाव होने से समुद्री जीव प्रभावित हुए थे। मुंबई हाई से लगभग 1600 मीट्रिक टन तेल का रिसाव हुआ। इसी तरह बंगाल की खाड़ी में क्षतिग्रस्त तेल से फैले टैंकर ने निकोबार द्वीप समूह में तबाही मचा दी थी। जिससे यहां रहने वाली जनजातियों और समुद्री जीवों को भारी हानि हुई थी। लाइबेरिया के एक टैंकर से 85000 मीट्रिक टन रिसे तेल ने स्कॉटलैण्ड में पक्षी-समूहों को बड़ी तादात में हानि पहुंचाई दी थी।

सबसे भयंकर तेल का फैलाव यूएसए के अलास्का में हुआ था। यह रिसाव प्रिंस विलियम साउण्ड टैंकर से हुआ था। इस तेल के फैलाव का असर छह माह तक रहा। इस अवधि के दौरान इस क्षेत्र में 35000 पक्षी, 10000 ओस्टर शेलफिस और 15 व्हेल मछली मर गईं थीं। बावजूद इस घटना का असर इराक युद्ध में सद्दाम हुसैन द्वारा समुद्र में छोड़े तेल से कम था। यह तेल इसलिए छोड़ा गया था कि कहीं यह अमेरिका के हाथ न लग जाए। अमेरिका द्वारा इराक के तेल टेंकरों पर की गई बमबारी से भी लाखों टन तेल समुद्री सतह पर फैला था। एक अनुमान के मुताबिक इस कच्चे तेल की मात्रा 110 लाख बैरल थी। इस तेल के बहाव ने फारस की खाड़ी में घुसकर जीव जगत के लिए भारी हानि पहुंचाई थी। इस प्रदूषण का असर मिट्टी, पानी और हवा तीनों पर पड़ा था। जानकारों का मानना है कि इराक युद्ध का पर्यावरण पर पड़ा दुष्प्रभाव हिरोशिमा-नागाशाकी पर हुए परमाणु हमले, भोपाल गैस त्रासदी और चेरनोबिल दुर्घटना से भी ज्यादा था। इस कारण इराक का एक क्षेत्र जहरीले रेगिस्तान में तब्दील हो गया और वहां महामारी का प्रकोप भी अर्से तक रहा।

समुद्री सतह पर ये तरल द्रव्य बड़ी मात्रा में फैलते हैं तो इससे जल की सतह पर एक मोटी परत बन जाती है, सूर्य की रौशनी और ऑक्सीजन को नीचे जाने में बाधा बन जाती है। इससे जल के भीतर स्वाभाविक रूप में जीवन व्यतीत कर रहे जीव दम घुटने से मर जाते हैं। जो जीव किसी कारण से बचे भी रहते हैं, उनकी प्रजनन क्षमता बुरी तरह प्रभावित हो जाती है। क्योंकि इन द्रव्यों का प्रभाव जहरीला होता है। पक्षियों के पंखों और स्तनधारियों के फर पर तेल जमने से उनकी ऊष्मारोधी क्षमता कम हो जाती है। अतएव ये जीव शरीर का तापमान बहुत कम हो जाने से मर जाते हैं। तेल के कुओं और भंडार गृहों में आग लगने से तीव्र एवं जहरीली रोशनी निकलती है। यह रोशनी मधुमक्खियों जैसे परा-गणकों को प्रभावित कर उनके जीवन चक्र को बाधित कर देती है। समुद्र में जल रहा तेल पृथ्वी का ऊर्जा संतुलन तेजी से बिगाड़ने का काम कर रहा है। इससे भविष्य में वैश्विक जलवायु आपातकाल की स्थिति निर्मित हो रही है। ऊर्जा असंतुलन बढ़ता रहा तो वायुमंडल का तापमान गरम होगा, जो एक साथ पृथ्वी, वायु और पानी की नमी को सोखने का काम करेगा। यह हिमनदों के बड़ी मात्रा में पिघलने का कारण बनने के साथ भारी बारिश का सबब बनेगा। जंगलों में आग लगने की घटनाएं बड़ी संख्या में देखने में आएंगी। मध्य एशिया में जल रहा यह तेल हिंद महासागर के तापमान को अप्रत्याशित रूप में बढ़ाएगा।इसका सीधा प्रभाव मौसम चक्र पर पड़ेगा। परिणाम स्वरूप अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, धूल भरे अंधड़ की घटनाएं कालांतर में देखने को मिल सकती हैं।

RGPV को 3 हिस्सों में बांटने का प्रस्ताव, हटेगा राजीव गांधी का नाम, उज्जैन-जबलपुर में नए विश्वविद्यालय

-दुर्गेश अरमोती

जगत प्रवाह. भोपाल। मध्य प्रदेश की उच्च शिक्षा व्यवस्था में बड़ा बदलाव होने जा रहा है। राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (RGPV), भोपाल को तीन अलग-अलग विश्वविद्यालयों में विभाजित करने का प्रस्ताव तैयार किया गया है। इस फैसले के बाद विश्वविद्यालय के नाम से पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी का नाम भी हट सकता है। प्रस्ताव के अनुसार भोपाल इकाई का नाम 'मध्यभारत प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय', उज्जैन इकाई का नाम 'मालवा प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय' और जबलपुर इकाई का नाम 'महाकौशल प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय' रखा जाएगा। यह प्रस्ताव 28 साल बाद आरजीपीवी की मौजूदा संरचना में बड़ा बदलाव माना जा रहा है।

समीक्षा बैठक में सीएम ने जताई सहमतिः मुख्यमंत्री मोहन यादव ने प्राथमिकता वाली योजनाओं की समीक्षा बैठक में इस प्रस्ताव पर सहमति जताई। अब इसे अंतिम मंजूरी के लिए कैबिनेट में पेश किया जाएगा। बैठक में यह भी तय किया गया कि मेडिकल यूनिवर्सिटी को फिलहाल तीन हिस्सों में बांटने का प्रस्ताव टाल दिया गया है। अधिकारियों ने तर्क दिया कि मौजूदा समय में विश्वविद्यालय का वार्षिक खर्च लगभग 50 करोड़ रुपए है, जबकि आय 65 से 70 करोड़ रुपए के बीच है। यदि इसे तीन हिस्सों में विभाजित किया गया तो खर्च बढ़कर करीब 150 करोड़ रुपए तक पहुंच सकता है, जिससे सरकार पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ पड़ेगा। अधिकारियों ने सुझाव दिया है कि मेडिकल यूनिवर्सिटी को फिलहाल दो हिस्सों जबलपुर और उज्जैन में बांटने पर ही विचार किया जाए।

प्रकृति से जुड़कर स्वस्थ रहें

पर्यावरण की फिक्र

डॉ. प्रशांत सिन्हा
पर्यावरणविद

प्रकृति के बीच रहना, या प्रकृति के नज़ारों को देखना भी, क्रोध, भय और तनाव को कम करता है और सुखद भावनाओं को बढ़ाता है। प्रकृति के संपर्क में आने से न केवल भावनात्मक रूप से बेहतर महसूस होता है, बल्कि यह शारीरिक स्वास्थ्य में भी योगदान देता है, रक्तचाप, हृदय गति, मांसपेशियों में तनाव और तनाव हार्मोन के उत्पादन को कम करता है। मनुष्य और प्रकृति का संबंध आदिकाल से रहा है। मानव सभ्यता के विकास की कहानी प्रकृति की गोद में ही लिखी गई है। चाहे वेदों की ऋचाएं हों, बुद्ध के उपदेश या महात्मा गांधी के विचार, हर एक में प्रकृति की महत्ता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। आज के तकनीकी युग में, जब मनुष्य अपने ही बनाए जाल में उलझा हुआ है, तब प्रकृति की ओर लौटने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। आधुनिक युग में मानव जीवन अत्याधिक व्यस्त होता जा रहा है। वर्तमान समय में हम देखते हैं कि जीवन की भागदौड़ में मनुष्य ने प्रकृति से दूर हो जाना ही अपनी उन्नति का पैमाना मान लिया है। महानगरों की भीड़, बढ़ता प्रदूषण, और लगातार कम होता हरियाली का क्षेत्र हमारे जीवन को प्रभावित कर रहा है। मानसिक तनाव, शारीरिक बीमारियां और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। ऐसे में हमें यह समझना आवश्यक है कि स्वस्थ जीवन के लिए प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना कितना महत्वपूर्ण है। हमें आज के आधुनिक व्यस्त जीवन में प्रकृति के प्रति एवं अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहकर ही इन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

प्रकृति न केवल हमारी शारीरिक बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक अध्ययन में पाया गया है कि जो लोग नियमित रूप से प्राकृतिक वातावरण में समय बिताते हैं, वे मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ और शांत रहते हैं। हरे-भरे पेड़, स्वच्छ हवा, और खुला आसमान हमें एक अद्वितीय शांति का अनुभव कराते हैं। यही कारण है कि गांवों में रहने वाले लोग अपेक्षाकृत अधिक खुश और संतुष्ट दिखाई देते हैं, जबकि शहरों की भीड़ में लोग अधिक तनावग्रस्त और बेचैन रहते हैं। स्वस्थ जीवन के लिए प्राकृतिक भोजन का महत्व भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। बाजार में उपलब्ध प्रोसेस्ड फूड, फास्ट फूड और मिलावटी खाद्य पदार्थ हमारे स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा रहे हैं। इसके विपरीत, प्राकृतिक और जैविक भोजन न केवल पौष्टिक होता है, बल्कि यह हमें ऊर्जा और ताजगी से भर देता है। हमारे पूर्वजों का जीवन प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर था और वे अपने समय में अधिक स्वस्थ और दीर्घायु थे। आयुर्वेद, योग, और प्राकृतिक चिकित्सा जैसी प्राचीन प्रणालियां भी हमें प्रकृति की ओर लौटने का संदेश देती हैं। योग और ध्यान का नियमित अभ्यास न केवल शारीरिक व्यायाम है, बल्कि यह हमारे मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करके हम अपने जीवन में संतुलन, शांति और प्रसन्नता प्राप्त कर सकते हैं।

आज के परिप्रेक्ष्य में, पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कदम बढ़ाना भी उतना ही आवश्यक है। प्रकृति को समय देकर और उसके प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए ही हम अपने वर्तमान एवं आने वाले जीवन को सही कर सकते हैं। जब हम अपने चारों ओर हरियाली को बढ़ावा देंगे, जल संसाधनों का संरक्षण करेंगे और स्वच्छता का ध्यान रखेंगे, तब ही हम एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर पाएंगे। हमें अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना चाहिए। एक

अध्ययन से समझाया जा सकता है जिनमें मस्तिष्क की गतिविधि को मापने के लिए fMRI का उपयोग किया गया था। जब प्रतिभागियों ने प्रकृति के दृश्य देखे, तो मस्तिष्क के वे हिस्से सक्रिय हो गए जो सहानुभूति और प्रेम से जुड़े होते हैं, लेकिन जब उन्होंने शहरी दृश्य देखे, तो मस्तिष्क के वे हिस्से सक्रिय हो गए जो भय और चिंता से जुड़े होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति ऐसी भावनाएँ जगाती है जो हमें एक-दूसरे से और अपने पर्यावरण से जोड़ती हैं।

प्रत्येक संस्था को अपने कार्यालय में महीने में दो बार वृक्षारोपण दिवस मनाना चाहिए और प्रतिवर्ष प्रत्येक कर्मचारी के लिए वृक्षारोपण का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए जिससे वे अत्याधिक जागरूक रहकर पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य करेंगे। यह हमारे भावी पीढ़ियों के लिए भी आवश्यक है कि वे एक स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण में जी सकें। प्रकृति का संरक्षण और उसकी महत्ता को समझना न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि सामूहिक स्तर पर भी आवश्यक है। सरकारें, संस्थान, और समाज के विभिन्न वर्गों को मिलकर इस दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। वृक्षारोपण, जल संरक्षण, और स्वच्छता अभियानों को एक जनांदोलन का रूप देना होगा। साथ ही, हमें अपने जीवनशैली में भी बदलाव लाना होगा प्रकृति से प्रेम करना, उसके साथ जुड़ना, और उसके महत्व को समझना केवल एक आदर्श वाक्य नहीं होना चाहिए, बल्कि यह हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बनना चाहिए। प्रकृति के साथ बिताया गया समय न केवल हमें स्फूर्ति देता है, बल्कि यह हमें आत्मिक शांति और संतोष का अनुभव भी कराता है। प्रकृति और मानव का यह रिश्ता अनमोल है। इसे संजोकर रखना हमारी जिम्मेदारी है। मनुष्य को अपनी जीवन शैली को बदलना होगा और स्वस्थ जीवन एवं प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने को दिशा में जागरूक होकर सक्रिय प्रयास कराने होंगे। एक स्वस्थ जीवन और सुखी समाज के निर्माण के लिए हमें प्रकृति के सान्निध्य में रहना होगा, उससे प्रेरणा लेनी होगी, और उसकी रक्षा करनी होगी। यही वह मार्ग है जो हमें एक सुदृढ़, स्वस्थ और संतुलित जीवन की ओर ले जाएगा।

सीखने से भी ज़्यादा ज़रूरी है "भूलना"

खुशहाल जीवन का मूल मंत्रः "जो बीत गई, सो बात गई"

आज की बात

प्रवीण कक्कड़
स्वतंत्र लेखक

हम हर समय कुछ नया सीखना चाहते हैं लेकिन "क्या आप जानते हैं, सीखने से भी ज्यादा जरूरी है, भूलना! हाँ, आपने सही सुना। हमारा दिमाग सुपर कम्प्यूटर की तरह है, इसमें गैर जरूरी पुराना डाटा रखेंगे तो यह हैंग होने लगेगा। सरल शब्दों में कहूं तो अपने जीवन को खाली स्लेट समझिये। अगर आप उस पर से पुरानी लिखावट नहीं मिटाएंगे, तो नया कैसे लिख पाएंगे? "भूलना" सिर्फ एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि आज़ादी है, अपने मन को हल्का करने की, नई उम्मीदों के लिए जगह बनाने की।

हम हर दिन नई चीजें सीखने का प्रयास करते हैं, नई आदतें अपनाना चाहते हैं, लेकिन अक्सर हम पुरानी सोच के पैटर्न, नकारात्मक भावनाओं और व्यर्थ के डर को छोड़ने में हिचकिचाते हैं। हमें यह जानना होगा कि किन बातों को अपने मस्तिष्क से निकाल देना है, किन अनुभवों से सबक लेकर उन्हें पीछे छोड़ देना है, और किन नकारात्मक भावनाओं को खुद पर हावी नहीं होने देना है।

जब हम अपने मन को पुरानी और अनावश्यक बातों से मुक्त करते हैं, तो हमारे पास नई चीजों को सीखने, नए विचारों को अपनाने और नए अवसरों को पहचानने के लिए अधिक जगह और ऊर्जा बचती है। बीती सारी बिसार दे, आगे की सुध ले– यह केवल एक सलाह नहीं, बल्कि एक सफल और खुशहाल जीवन का मूल मंत्र है।

आजकल हर कोई बॉडी को डिटॉक्स करने की बात कर रहा है, लेकिन क्या आपने कभी अपने मन को डिटॉक्स करने के बारे में सोचा है? आपका मन ही तो है जो आपकी दुनिया बनाता है। तो क्यों न उसे साफ़ किया जाए, नकारात्मक विचारों के कचरे को बाहर निकाला जाए? मैं आपको बताता हूँ 6 सुपर पावरफुल तरीके जिनसे आप अपने मन को डिटॉक्स कर सकते हैं और एक शांत, सकारात्मक जीवन की ओर बढ़ सकते हैं

मन का डिटॉक्सः

अचूक तरीके नकारात्मकता को अलविदा कहने के!
अतीत को विदाईः "आज एक नया दिन है"

किसी भी पुरानी बात को पकड़कर मत बैठे रहिए। अतीत एक गुज़रा हुआ कल है, उसे जाने दीजिए। नए पत्ते तभी आते हैं जब पुराने गिर जाते हैं। हर सुबह खुद से कहिए, "आज एक नया दिन है, मैं पिछली तकलीफ़ों और गलतियों को पीछे छोड़कर आगे बढ़ूँगा।" एक कागज़ पर उस बात, डर या गुस्से को लिखिए जिसे आप छोड़ना चाहते हैं और फिर उसे जला दीजिए। याद रखिए, अतीत की गठरी आपके कंधों पर बोझ बनकर आपके भविष्य के रास्ते में रुकावट डालेगी। जब तक आप पुराना छोड़ेंगे नहीं, नया कैसे अपनाएंगे?

यह है असली "मेंटल डिटॉक्स"

रोज़ रात को सोने से पहले 05 मिनट निकालिए और लिखिए कि आज आपने क्या नया सीखा, कौन सी बात आपको बेकार लगी और आप क्या छोड़ सकते हैं। उस लिखे हुए पन्ने को फाड़ दीजिए या जला दीजिए, यही है असली "मेंटल डिटॉक्स"। लिखने से आपके विचार स्पष्ट होते हैं और जब आप किसी चीज़ को "छोड़ने" का फैसला लिख देते हैं तो आपका मन उसे स्वीकार करने लगता है। यह नकारात्मकता को बाहर निकालने का एक शक्तिशाली तरीका है।

मन की सफाईः मैं गलतफहमी को अलविदा कह सकता हूँ!

जैसे आप अपनी अलमारी से पुराने कपड़े निकालते हैं, वैसे ही अपने दिमाग से पुरानी, नकारात्मक सोच को बाहर निकालिए। दिमाग की अलमारी में जमे नकारात्मक विचारों के कचरे को साफ़ करना ज़रूरी है, तभी आप नई सकारात्मक विचारों की किताबें रख पाएंगे। हर रविवार को "माइंड क्लीनिंग डे" मनाइए। खुद से पूछिए, "इस हफ्ते मैं कौन सी नकारात्मक आदत, डर या गलतफहमी को अलविदा कह सकता हूँ?" उसे मानसिक रूप से कचरे की तरह बाहर फेंक दीजिए। घर की सफाई की तरह मन की सफाई भी ज़रूरी है, वरना पुरानी सोच धीरे-धीरे ज़हर बन जाती है।

सकारात्मक संगतः नए लोग, नए विचार!

उन लोगों से दूरी बनाइए जो आपको पीछे खींचते हैं। यह सच है कि "आप जैसे लोगों के साथ बैठते हैं, वैसे ही बन जाते हैं।" अपने जीवन के दायरे से उन लोगों को कम कीजिए जो हमेशा शिकायत करते हैं, पुरानी बातों को दोहराते हैं और नए विचारों को नकारते हैं। इसके बजाय, उन लोगों के साथ जुड़िए जो आपको प्रेरित करते हैं, जो सकारात्मक और उत्साही हैं। आपका आसपास का माहौल आपकी सोच को आकार देता है। यदि आप चाहते हैं कि आपकी सोच ताज़ा रहे, तो अपने आसपास ताज़ा विचारों वाले लोगों को रखिए।

अहंकार का त्यागः सीखने के लिए हमेशा तैयार रहें!

यह मान लीजिए कि आपको सब कुछ नहीं आता। "जो बर्तन भरा हुआ है, उसमें और कुछ नहीं डाला जा सकता।" हर दिन एक नई चीज़ सीखने का लक्ष्य रखिए, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो। जब कोई नई बात सुनें, तो पहले ध्यान से सुनें, फिर उस पर विचार करें और अंत में अपनी राय दें। "मुझे पता है" कहने की बजाय "मैं सीखना चाहता हूँ" कहिए। अहंकार ज्ञान प्राप्त करने के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा है। जो झुकता है, वही आगे बढ़ता है।

मौन की शक्तिः भीतर की आवाज़ को सुनें!

मौन में वह शक्ति है जो दुनिया के शोर को शांत कर देती है। "जब आप चुप होते हैं, तो आपकी आत्मा बोलती है।" हर दिन 5-10 मिनट के लिए मौन का अभ्यास कीजिए। इस दौरान सिर्फ अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित कीजिए। जब मन में विचार आएं, तो उन्हें बादलों की तरह आते-जाते देखिए, बिना किसी जुड़ाव के। मौन आपके मन का दर्पण है। जब आप शांत होते हैं, तो आप स्पष्ट रूप से देख पाते हैं कि आपके लिए क्या महत्वपूर्ण है और क्या नहीं। यह आपके मन को अंदर से डिटॉक्स करने का एक अद्भुत तरीका है।

4.95 लाख से अधिक हितग्राहियों के बैंक खाते में

₹495.96 करोड़

आदान राशि अंतरित

साय सरकार में मेहनतकश हाथों को मिल रहा संबल, सुरक्षा और सम्मान

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क | Visit us : /ChhattisgarhCMO /DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

R.O. No. : 13769/ 2

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजया पाठक द्वारा जेयन आफसेट वर्क्स, पुल बोगदा भोपाल 462023 (मप्र) से मुद्रित तथा एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल (मप्र) से प्रकाशित। **संपादक : विजया पाठक।**
RNI-MPBIL/2011/39805 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)